भारत सरकार
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
राँची मंडल, राँची

ईटखोरी - एक दृष्टि में

मोहाने नदी के दाहिने तट पर स्थित ईटखोरी भद्रकाली मंदिर के लिए प्रसिद्ध है और इस मंदिर की अधिष्ठात्री देवी प्रतिमा की पहचान बौद्ध देवी तारा के रूप में की जाती है। प्रतिमा के आसन पर अंकित एक लेख में गुर्जर-प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल (890-910 ई.) का उल्लेख है। स्थानीय तौर पर यह स्थल रजरप्पा के पश्चात इस क्षेत्र का दूसरा महत्वपूर्ण शक्तिपीठ माना जाता है।

उत्खनन् से प्राप्त संरचनात्मक अवशेष

सर्वप्रथम स्व. हीरानन्द शास्त्री ने ईटखोरी के पुरातात्विक महत्व पर शोध कार्य किया था जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के 1920-21 की वार्षिक रिर्पोट में प्रकाशित की गई थी। इसके अतिरिक्त इस स्थल की चर्चा हजारीबाग के जिला गजेटियर एवं डी. आर. पाटिल लिखित - *एन्टीक्वीरियन रिमेन्स इन बिहार* में भी की गई है। उक्त सभी प्रकाशनों में ईटखोरी को बौद्ध एवं हिन्दू दोनों मतों से संबंधित स्थल के रूप में चिन्हित किया गया था।

ईटखोरी में पुरातात्विक उत्खनन का कार्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के राँची मण्डल द्वारा वर्ष 2011-12 एवं 2012-13 के दो सत्रों में तत्कालीन अधीक्षण पुरातत्वविद्, श्रीमान् एन. जी. निकोशे (अब सेवानिवृत) के निर्देशन में किया गया। इस उत्खनन के दो महत्वपूर्ण उद्देश्य थे :-

गणेश प्रतिमा

1. इस स्थल के सांस्कृतिक अनुक्रम को जानना एवं
2. संरचनात्मक अवशेषों को अनावृत करना ताकि इस क्षेत्र के गुप्तोत्तर कालीन स्थापत्य विशेषताओं की जानकारी मिले।

ईटखोरी के पुरातात्विक अवशेष भद्रकाली मंदिर परिसर के इर्द-गिर्द लगभग 1.1 वर्ग कि. मी. की परिधि में फैले हुए हैं। पहले सत्र में उत्खनन कार्य मंदिर के पश्चिमी भाग में किया गया। कुल 09 उत्खातों की खुदाई से एक स्तूप के अवशेष प्रकाश में आये। जिसकी परिमाप 13.90 x 11.00 वर्गमीटर थी तथा उँचाई 60 से. मी. थी। इसके आधार में बलुआ पत्थर के

तराशे खंड लगे हुए थे। उल्लेखनीय है कि इन पाषाण खंडों पर कीर्तिमुख, कलश, मिथुन-युग्म, चैत्य-गवाक्ष, भारवाहक जैसै पौराणिक अभिप्रायों का अंकन किया गया था। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये पाषाण खंड किसी पूर्ववर्ती मंदिर के भाग थे।

ताँबे एवं लोहे के विभिन्न उपकरण

पहले सत्र की निरंतरता में राँची मण्डल ने पुनः वर्ष 2012-13 में यहाँ उत्खनन कार्य जारी रखा। इस सत्र में उत्खनन को तीन अलग-अलग जगहों अर्थात पहला भद्रकाली मंदिर के निकट, दूसरा कानूनिया माई मंदिर के समीप तथा तीसरा चूल्हार टाँड में केन्द्रित किया गया।

इस उत्खनन के दौरान एक बड़ी संख्या में पुरावशेष प्रकाश में आये जिनकी तिथि 9वीं-10वीं सदी ई. निर्धारित की जा सकती है। महत्वपूर्ण पुरावशेष में गणेश, विष्णु, सरस्वती, महिषासुरमर्दिनी आदि की प्रतिमाएँ, योनिपीठ, आमलक (खंडित), ताँबे और लोहे के विभिन्न औजार यथा-छेनी, चाकू, कील, वाणाग्र आदि प्रकाश मे आये।

मृदभांडों में लाल रंग एवं लाल चमकीले मृदभांडों के प्रमाण मिले। मृदभांड प्रधानतः चाक निर्मित थे परंतु इनमें से कुछ यथा जार, बेसिन, कलश, बड़े आकार के घड़े तथा हांडी आदि हस्तनिर्मित भी मिले। चाक निर्मित पात्रों में कटोरे, तश्तरी (छिछले एवं गहरे दोनों प्रकार के) ढक्कन, सजावटी दीपक, पूजा-पाठ हेतु छोटे पात्र, खड़े व धारदार किनारे वाले कटोरे, चोंचदार बर्तन आदि प्रधान है। इनमें से कुछ पात्रों पर उत्कीर्ण कर एवं ठप्पे लगाकर अलंकरण बनाये गये थे।

उत्खनन् से प्राप्त मृद्भांड के टुकड़े

उत्खनन के परिणामस्वरूप उत्खननकर्ता ने इस स्थल की पहचान पाल काल के एकल सांस्कृतिक स्थल के रूप में की है जिसकी तिथि 9वीं-10वीं सदी ई. निर्धारित की गई है। उत्खनन के रिपोर्ट लेखन का कार्य प्रगति पर है।

अधीक्षण पुरातत्वविद्
राँची मंडल, राँची